International Journal of Advanced Research and Development
ISSN: 2455-4030
Impact Factor: RJIF 5.24
www.advancedjournal.com
Volume 3; Issue 2; March 2018; Page No. 1226-1227

श्रीमद् वल्लभाचार्य का शिक्षा–दर्शन

डॉ० बी० एल० श्रीमाली[1], मोहन लाल रेगर[2]

[1] विभागाध्यक्ष, (शिक्षा) मा. व. श्रमजीवी महाविद्यालय, जनार्दन राय नागर राजस्थान विद्यापीठ, (डिम्ड–टू–बी) विश्वविद्यालय, उदयपुर, राजस्थान, भारत।

[2] लोकमान्य तिलक शिक्षण–प्रशिक्षण, महाविद्यालय डबोक, ज.ना.रा.ना. राजस्थान विद्यापीठ, (डिम्ड – टू–बी) विश्वविद्यालय, उदयपुर, राजस्थान, भारत।

1. प्रस्तावना

श्रीमद् वल्लभाचार्य ने भक्ति के अतिरिक्त शिक्षा के क्षेत्र में भी अपने विचार व्यक्त किये है। इसके अन्तर्गत श्रीमद् वल्लभाचार्य के अनुसार शिक्षा का अर्थ/ज्ञान, उद्देश्य, विद्यालयी पाठ्यक्रम, शिक्षण विधियां , गुरु–शिष्य संबंध, विद्यालयी अनुशासन, स्त्री शिक्षा व व्यसन मुक्ति पर पुस्तकीय अध्ययन, साक्षात्कार, अवलोकन व अन्य ज्ञात किया गया है।

श्रीमद् वल्लभाचार्य ने विकट परिस्थिति में जन जागृति की प्रेरणा जो शिक्षा व समाज के दृष्टिकोण से एक अनुपम कार्य है।

2. श्रीमद् वल्लभाचार्य का जन्म

भक्तिकालीन सगुणधारा की कृष्णभक्ति शाखा के आधरस्तंभ एवं पुष्टि प्रणेता श्री वल्लभाचार्य जी (1479–1531) का प्रादुर्भाव विक्रम संवत् 1535, वैशाख कृष्ण एकादशी को दक्षिण भारत के कांकरवाड़ ग्राम वासी तैलंग ब्राह्मण श्री लक्ष्मणभट्ट की पत्नी इलम्मागारू के गर्भ से हुआ। यह स्थान वर्तमान छतीसगढ़ राज्य के रायपुर के निकट चम्पारण है। उनके वेश्वनावतार (अग्नि का अवतार) कहा गया है। वे वेदशास्त्र में पारंगत थे।

3. श्रीमद् वल्लभाचार्य के अनुसार शिक्षा दर्शन

श्रीमद् वल्लभाचार्य ने शिक्षा के क्षेत्र में अपने विचार निम्न स्वरूप में प्रस्तुत किये हैं:–

3.1 श्रीमद् वल्लभाचार्य ने अनुसार शिक्षा का अर्थ

श्रीमद् वल्लभाचार्य ने शिक्षा के अर्थ के अतंर्गत विज्ञान, बुद्धि, चेतना, बोध, नियमों, मान्य कसौटियों, क्रमबद्धता, सार्वजनिकता, विषयगतता आदि सम्मिलित किया गया है।

शिक्षा के पॉच वर्ष, वैराग्य, सांख्य, अष्टांग योग, तप, भक्ति को विद्या कहा गया है।

साक्षात्कार के माध्यम से श्रीमान् परम् पूज्यनीय राकेश जी (इन्द्रदमन जी) महाराज श्रीनाथ जी नाथद्वारा मन्दिर मण्डल पीठाधीश्वर के मतानुसार श्रीमद् वल्लभाचार्य के अनुसार शिक्षा वह है जो संस्कारित, बालक आत्मसात् करे, आध्यात्मिक, सकारात्मक नवीन ज्ञान की प्राप्ति व बालक का सर्वांगीण विकास हो उसे शिक्षा कहा गया है।

इनके अनुसार बालक की शिक्षा इस प्रकार की शिक्षा का समावेश होना आवश्यक माना है।

3.2 श्रीमद् वल्लभाचार्य के अनुसार शिक्षा के उद्देश्य

श्रीमद् वल्लभाचार्य ने शिक्षा के उद्देश्य के सन्दर्भ में श्री कृष्ण की पुष्टिमार्गीय सेवा करना एवं भक्ति के द्वारा ईश्वर साक्षात्कार कराना। धर्म के प्रति दृष्टिकोण विकसित करना, श्रद्वा की भावना उत्पन्न करना, वेद पढ़कर विद्यापूर्ण करना, वेद पढ़े व पढ़ाये, (तत्वदीप निबन्ध) का अध्ययन करना, धर्मानुष्ठान करना वेदों का ज्ञान उनके अनुसार कर्म करना, अन्तःकरण का विकास करना मुक्ति का उद्देश्य, बालक का मानसिक विकास ।

साक्षात्कार के द्वारा श्रीमान् परम पूज्यनीय राकेश जी (इन्द्रदमन जी) महाराज व श्रीमान् विशाल बाबा (भुपेशजी महाराज) ने श्रीमद् वल्लभाचार्य के अनुसार शिक्षा के उद्देश्य के सन्दर्भ में बताया कि बालक का आध्यात्मिक विकास के साथ ईश्वर के प्रति आस्था स्थापित करना व बालक का विकास करना, सभी बालकों में उपरोक्त प्रकार के उद्देश्य का विकास करना परम् ध्येय रहा है।

3.3 श्रीमद् वल्लभाचार्य के अनुसार विद्यालयी पाठ्यक्रम

श्रीमद् वल्लभाचार्य ने विद्यालयी पाठ्यक्रम के सन्दर्भ साहित्य–संगीत, शिक्षा, कला शिक्षा को सम्मिलित करना आवश्यक बताया क्योंकि वह भी दार्शनिक, धर्माचार्य, कला संरक्षक तथा संगीत के क्षेत्र में मूल्यवान योगदान दिया। विद्यालयी पाठ्यक्रम में आध्यात्मिक व व्यवहारिक ज्ञान को सम्मिलित किया जाना आवश्यक बताया।

साक्षात्कार के द्वारा श्रीमान् परम पूज्यनीय राकेश जी (इन्द्रदमन जी) महाराज व श्रीमान् विशाल बाबा (भूपेशजी महाराज) ने श्रीमद् वल्लभाचार्य के अनुसार पाठ्यक्रम में आध्यात्मिक शिक्षा, वैदिक शिक्षा, योग शिक्षा, नैतिक शिक्षा को अपनाने पर बल दिया।

3.4 श्रीमद् वल्लभाचार्य के अनुसार गुरु–शिष्य सम्बन्ध

श्रीमद् वल्लभाचार्य के अनुसार शिष्य को सर्वप्रथम दण्डवत प्रणाम, नमस्कार करना आवश्यक बताया अपने धर्मानुसार कर्म निर्वहन करना, तथा गुरु के प्रति सकारात्मक व शुद्ध भाव रखना, गुरु को ईश्वर मानकर ज्ञान प्राप्त करने गुरु द्वारा भी विद्या पूर्ण मानसिकता से दी जा सकती है। गुरु द्वारा शिष्य को ईश्वर के प्रति भाव को जोड़ने से बालक का आध्यात्मिक विकास होगा।

साक्षात्कार के माध्यम से श्रीमान् परम् पूज्यनीय राकेश जी (इन्द्रदमन जी) महाराज व श्रीमान् विशाल बाबा (भूपेशजी महाराज) द्वारा किये गये साक्षात्कार से यह ज्ञात हुआ कि शिक्षा के अन्तर्गत गुरु–शिष्य सम्बन्ध मधुर व अच्छे होने चाहिए व सर्वप्रथम शिष्य का कर्तव्य है कि गुरु के सामने साश्टांग प्रणाम आवश्यक है इसके पश्चात् गुरु को ईश्वर मानना अवलोकन दृष्टिकोण से यह निकलकर सामने आता है कि वर्तमान में पुष्टिमार्गीय पीठ(सम्प्रदाय) में गुरु – शिष्य परम्परा का निर्वहन पूर्व जिम्मेदारी से किया जा रहा है। इस प्रकार शिक्षक व शिक्षार्थी के मध्य भी संबंध अटूट व प्रगाढ़ होना आवश्यक है।

गुरु वह है जो कठिनाईयों व समस्या में शिष्य को मार्गदर्शित करे

व शिष्य भी गुरु द्वारा बताये गये मार्ग का अनुसरण करे जिससे समस्या निराकरण सम्भव है।

3.5 श्रीमद् वल्लभाचार्य के अनुसार विद्यालयी शिक्षण पद्धतियॉ

श्रीमद् वल्लभाचार्य ने अपनी दक्षिण की धार्मिक यात्रा प्रारम्भ की और उस समय उनकी रामानुज, माध्व और निम्बार्क सम्प्रदाय के विद्वानों से बहुत वाद– विवाद हुआ, इससे शिक्षण पद्धति में वाद–विवाद का प्रयोग कराना आवश्यक माना इनके सभी ग्रन्थों में उन्होने वैराग्य और त्याग पर जोर दिया। वे स्वयं वैरागी ही रहे और अनुयायियो को विभिन्न आज्ञाओं का अनुकरण करने का निर्देश दिया। जिससे अनुकरण विधि निकलकर आती है।

ज्ञान केन्द्रित विधि, उपासना विधि, धर्म केन्द्रित विधि, व्याख्यान विधि, प्रश्नोंतर विधि, मन को वश में रखकर अध्ययन विधि स्वानुभव द्वारा सीखना आदि अवलोकन माध्यम से व साक्षात्कार द्वारा श्रीमान् परम पूज्यनीय राकेश जी (इन्द्रदमन जी) महाराज व श्रीमान् विशाल बाबा(भूपेशजी महाराज) द्वारा विद्यालयी शिक्षण पद्धति में शास्त्रार्थ विधि, वैदिक पद्धति व कथा–कथन विधि द्वारा बालक को शिक्षण कार्य कराया जाना चाहिए।

इन शिक्षण पद्धतियों को हमारी शिक्षण प्रणाली में अपनाकर शिक्षण कार्य को प्रभावी बनाया जा सकता है।

3.6 श्रीमद् वल्लभाचार्य के अनुसार अनुशासन

श्रीमद् वल्लभाचार्य के अनुसार अनुशासन के सन्दर्भ में आपने विचार दिये है कि सर्वप्रथम अतःकरण पर नियंत्रण करना आवश्यक बताया आपने बताया कि अतःकरण शरीर की इन्द्रियों का राजा है। अन्तःकरण में मन, बुद्धि, अंहकार रहते है। यदि अंतःकरण वशीभूत हो जाये तो शरीर की इन्द्रियॉ, मन, बुद्धि तथा अंहकार भी सहज रुप से वशीभूत हो सकते है। अतः बालक का अन्तःकरण पर नियंत्रण आवश्यक है। यह अनुशासन रखने में सहयोग करता है।

बालक को अष्टांग योग से शारीरिक व मानसिक विकास कर विद्यालयी अनुशासन को बनाये रखने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है। यह अष्टांग योग से तात्पर्य :– यम, नियम, आसन, प्राणायाम, प्रत्याहार धारणा, ध्यान, समाधि इन सभी को अष्टांग योग कहते है। प्रतिदिन नवधा भक्ति का श्रवण कीर्तन करने से वह निर्दोशी बन जाता है तथा ईश्वर भक्ति के प्रति बालक के भाव जागृत होते है। जिस प्रकार श्री नाथजी मन्दिर में समय पालन किया जाता है उसी प्रकार बालक को विद्यालय समय पालन का आग्रह किया।

साक्षात्कार के माध्यम से श्रीमान् परम पूज्यनीय राकेश जी (इन्द्रदमन जी) महाराज व श्रीमान् विशाल बाबा(भूपेशजी महाराज) ने बताया कि छात्र को धैर्य व विवेक से शिक्षण कार्य करना चाहिए जिससे अनुशासन बनाये रखने में सहयोगी सिद्ध हो सके। तथा अवलोकन दृष्टिकोण से जिस प्रकार का अनुशासन पुष्टिमार्ग में है उस प्रकार का अनुशासन बालक को अपनाना आवश्यक है।

सार रुप में कह सकते है कि श्रीमद् वल्लभाचार्य के अनुसार शिक्षा दर्शन को वर्तमान शिक्षा प्रणाली में समन्वय कर शिक्षण प्रणाली में नवाचार का बीजारोपण कर सकते है।

इस प्रकार की शिक्षा वर्तमान शिक्षा प्रणाली में अपेक्षित है।

4. उपसंहार

श्रीमद् वल्लभाचार्य ने शिक्षा के अर्थ के सन्दर्भ आध्यात्मिक, सकारात्मक नवीन ज्ञान की प्राप्ति, संस्कारित ज्ञान, व बालक के सर्वांगीण विकास को शिक्षा कहा है। बालक का मानसिक विकास आध्यात्मिक विकास, सेवा–भावना का विकास करना प्रथम ध्येय रहा है। विद्यालयी पाठ्यक्रम में वैदिक शिक्षा, योग शिक्षा, नैतिक शिक्षा को विद्यालयी पाठ्यक्रम में जोडने पर बल दिया है। विद्यालयी शिक्षण कार्य वैदिक पद्धति, धर्म केन्द्रित, उपासना, व्याख्यान, प्रश्नोत्तर विधि से कराया जाना आवश्यक बताया। गुरु – शिष्य के सन्दर्भ में बताया कि शिक्षक व शिक्षार्थी के गुरु–शिष्य संबंध मधुर, अटूट व प्रगाढ़ होने चाहिए। शिष्य को गुरु का सम्मान व आज्ञा पालन पर अडिग रहना आवश्यक है। बालक को शिक्षा में पुष्टिमार्ग के अनुसार अनुशासन का पालन करने से शिक्षा में नवाचार का प्रवेश होगा।

इस प्रकार की शिक्षा वर्तमान शिक्षण–प्रणाली के लिए आवश्यक है।

5. सन्दर्भ ग्रन्थ

1. वल्लभ वेदान्त, वृष्टि प्रकाशन, उदयपुर,
2. श्रीमद् वल्लभाचार्य व्यक्तित्व, सिद्धान्त और संदेश, श्रीमद् वल्लभाचार्य पंचशती प्रकाशन, इन्दौर (प्रथम भाग)
3. तत्वदीप निबन्ध, विद्या विभाग, मन्दिर मण्डल नाथद्वारा, (प्रथम भाग)
4. श्री बह्मसूत्राणु भाश्य तृतीयध्याय सानुवाद, प्रकाशक विद्या–विभाग, मन्दिर मण्डल नाथद्वारा,
5. चौरासी वैष्णवन वार्ता, प्रकाशक विद्या–विभाग, मन्दिर मण्डल नाथद्वारा, शोडश ग्रन्थ, प्रकाशक वैष्णव मित्र मण्डल सार्वजनिक न्यास इन्दौर,
6. तत्वदीप निबन्ध, प्रकाशक विद्या–विभाग, मन्दिर मण्डल नाथद्वारा, (द्वितीय भाग)
7. साक्षात्कार द्वारा :– साक्षात्कर्ता श्रीमान् परम पूज्यनीय राकेश जी (इन्द्रदमन जी) महाराज व श्रीमान् विशाल बाबा(भूपेशजी महाराज) के द्वारा श्रीमद् वल्लभाचार्य के शिक्षा–दर्शन पर साक्षात्कार सम्पन्न किया गया।
8. "http://hi.wikipedia.org/w/index.php?tital=वल्लभाचार्य –वसकपकत्र 3518430